सनातन भारत

जागृत भारत

ब्रितानी व्यवधानका काल

समाजनीति समीक्षण केन्द्र चेन्नै

Centre for Policy Studies WWW.CPSINDIA.ORG

भारत निस्तेज होने लगा

ब्रितानी आक्रान्ता एक शताब्दीसे अधिकके सतत प्रयासोंके पश्चात् अठारहवीं ईसवी शताब्दीके मध्यमें भारतभूमिपर किञ्चित् पाँव जमानेमें सफल हुए। उन्नीसवीं शताब्दीके मध्यतक उन्होंने प्रायः समस्त भारतपर अपना आधिपत्य जमा लिया। उसके पश्चात् एक सौ वर्षतक उन्होंने भारतपर शासन किया।

भारतने ब्रितानियोंसे पूर्व भी कतिपय विदेशी आक्रान्ताओं और शासकोंको झेला था। विशेषतः ईसाकी दूसरी सहस्राब्दीके प्रारम्भसे भारतके कुछ भागोंपर विदेशियोंका राज्य स्थापित होने लगा था। विदेशी आक्रमण एवं शासनके उस कालक्रममें भारतकी गरिमा एवं ओजका निश्चय ही क्षय हुआ। तथापि भारतका आत्मविश्वास एवं संकल्प परास्त नहीं किया जा सका। भारतीय उस कालमें भी अपनी सभ्यताकी उत्कृष्टता और अपने देशकी सहज समृद्धिपर गौरव करते रहे। उनका चित्त सनातन धर्ममें अवस्थित रहा। भारतीय सभ्यताके प्रायः अनादि अनुशासन एवं व्यवस्थाओंका अनुपालन करनेका प्रयास वे करते रहे।

ब्रितानी प्रशासनके अन्तरालमें भारतकी सहज प्राकृतिक सम्पदाकी नितान्त उपेक्षा हुई। प्रकृतिसे प्राप्त सहज साधनोंका समुचित नियोजनकर भौतिक एवं सामाजिक समृद्धिका सम्पादन करनेकी भारतकी उच्च दक्षताएँ क्षीण पड़ने लगीं।

भौतिक सम्पदा और तकनीकी कौशलके ह्राससे भी अधिक दुःखद घटना इस अन्तरालमें भारतकी अस्मिताके प्रायः लोपकी है। भारतके दीर्घ इतिहासमें कदाचित् प्रथमतः भारतके अपेक्षाकृत समर्थ-सम्पन्न लोग भारतीय सभ्यताकी अनादि समयसिद्ध अवधारणाओं एवं व्यवस्थाओंके सत्य एवं उत्कृष्टताके प्रति शंकाका भाव रखने लगे।

महात्मा गाँधीने स्वदेशी एवं स्वधर्मकी ज्योतिसे भारतकी निष्ठा एवं उत्साहको कुछ सीमातक पुनः जागृत किया। परन्तु ब्रितानी अन्तरालमें आयी विस्मृतिका पूर्णतः निवारण अभी नहीं हो पाया है। विस्मरणके इस कालसे मुक्त होकर विश्वमें अपनी सम्पूर्ण भौतिक एवं आध्यात्मिक सम्पदाओंके साथ पुनः प्रकाशित होनेके लिये भारतवर्षको स्वदेशी एवं स्वधर्मकी स्थापनाके नवीन एवं सशक्त प्रयास करने होंगे।

कृषिका तीव्र ह्रास हुआ

कृषिक्षेत्रमें भारतकी समृद्धि ब्रितानी शासनके अन्तरालमें सबसे पहले प्रभावित हुई। यह समृद्धि भारतके कृषक भूमिकी श्रमपूर्वक जुताई-निराईकर, उपलब्ध जलका अत्यन्त कौशलपूर्वक संग्रह एवं नियोजनकर और पशुओं का स्नेहपूर्वक पोषणकर अर्जित करते थे। ब्रितानी प्रशासनमें यह सब करना असम्भव हो गया।

चेंगलपट्टु सीधे ब्रितानी प्रशासनके अधीन आनेवाला भारतका प्रायः प्रथम क्षेत्र था, इस क्षेत्रकी उपजका प्राचुर्य ब्रितानी प्रशासनके प्रारम्भ होते ही अभावमें परिवर्तित होने लगा। अठारहवीं शताब्दीके आठवें दशकमें चेंगलपट्टु क्षेत्रमें प्रति हेक्टेयर ढाई टनका उत्पादन होता था। नौंवें दशकमें उस कालकी विनाशकारी लड़ाइयोंके चलते भी उत्पादकता प्रायः इसी स्तरपर रही। परन्तु सीधे ब्रितानी प्रशासनके कुछ ही वर्षों पश्चात् १७९८ में इस क्षेत्रकी प्रति हेक्टेयर कृषि-उपज मात्र एक चौथाई रह गयी थी।

देशके समस्त भागोंमें कृषिकी यही गति हुई। सामान्यतः इतिहासकार ऐसा मानते हैं कि प्रायः पूरी उन्नीसवीं शताब्दीमें भारतमें कृषिकी उत्पादकता घटती गयी अथवा किसी अति अल्प-स्तरपर स्थिर रही। १८९० ईसवीसे कृषि सम्बन्धी आँकड़ोंका नियमित संकलन किया जाने लगा। उन आँकड़ोंसे स्पष्ट है कि अठारहवीं शताब्दीके अन्तमें प्रारम्भ हुआ कृषिका ह्रास बीसवीं शताब्दीके मध्यतक रुक नहीं पाया। ब्रितानी शासनके अवसानपर सन् १९४७ ईसवीमें भारतमें धानकी माध्य उपज मात्र एक टन प्रतिहेक्टेयर रह गयी थी, गेहूँका माध्य उत्पादन केवल ६५० किलोग्राम हो पाता था और मोटे अनाजोंकी उपज तो इससे भी न्यून थी।

बाहुल्यका स्थान अभावने ले लिया

भारत सर्वदा अन्नबाहुल्यका देश रहा है। ब्रितानी शासनके प्रारम्भ होते ही यह बाहुल्य अभावमें परिवर्तित होने लगा। भारतके दीर्घ इतिहासमें कदाचित् यह पहला अवसर था जब भारतभूमि अपने लोगों एवं पशुओंके भरणके लिये पर्याप्त अन्न उपजा पानेमें असमर्थ रही। प्रतिदशक देशके किसी-न-किसी व्यापक भागमें दुर्भिक्षका आवर्तन होने लगा।

चेंगलपट्टु क्षेत्रमें अठारहवीं शताब्दीके आठवें दशकमें प्रतिव्यक्ति प्रायः एक टन अनाजका माध्य वार्षिक उत्पादन होता था। सन् १८९० ईसवीमें संकलित सांख्यिकी आँकड़ोंके अनुसार उस समय देशका प्रतिव्यक्ति उत्पादन मात्र २०० किलोग्राम रह गया था। और सन् १९४७ ईसवीमें ब्रितानी शासनके अवसानपर भारतका उत्पादन १५० किलोग्राम प्रतिव्यक्तिके अति निम्न स्तरपर पहुँच गया था।

सन् १८८० ईसवीके दुर्भिक्ष-आयोगने दुर्भिक्ष निवारणकी प्रशासकीय प्रक्रियाओंका नियमन करते हुए यह निर्धारित किया था कि किसी क्षेत्रके लोगोंको भूखसे मरनेसे बचानेके लिये वहाँ २०० किलोग्राम प्रतिव्यक्तिके तुल्य मात्रामें अनाज उपलब्ध करवाना आवश्यक है। आज हम दुर्भिक्ष निवारणके लिये निर्धारित स्तरके समतुल्य उत्पादन ही कर पा रहे हैं। हमारा समग्र उत्पादन प्रतिव्यक्ति २०० किलोग्राम अनाजकी उपलब्धि करवानेके लिये पर्याप्त भर है। ब्रितानी शासनके पूर्वके भारतमें प्रचलित अन्नबाहुल्यसे हम अभी बहुत दूर हैं। ब्रितानी प्रशासनके प्रायः २०० वर्षोंके क्षयकारी अन्तरालके प्रभावसे अभी हम मुक्त नहीं हो पाये हैं।

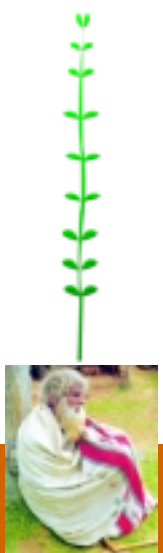

उद्योगोंका समूल विनाश होने लगा

ब्रितानी प्रशासनमें भारतीय कृषि क्षीण हुई, परन्तु भारतीय उद्योग तो समूल विनाशकी स्थितिमें पहुँच गये। तमिलनाडुके चेंगलपट्टु क्षेत्रमें ब्रितानी प्रशासनके आरम्भसे तुरन्त पूर्व एवं पश्चात् के आँकड़े उपलब्ध हैं। अठारहवीं शताब्दीके आठवें दशकमें वहाँके मात्र आधे कुटुम्ब केवल कृषिपर निर्भर थे, शेष आधे औद्योगिक एवं सेवाक्षेत्रोंसे सम्बन्धित आर्थिक गतिविधियोंमें संलग्न थे। सौ वर्ष उपरान्त उन्नीसवीं शताब्दीके आठवें दशकमें इस क्षेत्रके ८० प्रतिशत लोग खेतीपर निर्भर करने लगे थे। औद्योगिक एवं सेवाक्षेत्रोंमें जीविका प्राप्त करनेके अवसर तबतक समाप्तप्राय हो गये थे।

अठारहवीं शताब्दीके अन्ततक भारत विश्वमें कपड़े का सबसे बड़ा उत्पादक एवं निर्यातक देश था। उन्नीसवीं शताब्दीके पहले तीन दशकोंके भीतर भारतीय वस्त्र अन्तरराष्ट्रीय मण्डियोंसे प्रायः लुप्त ही हो गये थे। वस्त्र-उद्योगके इस ह्रासके कारण उन्नीसवीं शताब्दीके उत्तरार्द्धमें बंगालके बुनकरों और कताईसे जीवनयापन करनेवाली महिलाओं-द्वारा झेले गये अकथनीय कष्टोंकी दुःखद गाथाओंसे इतिहासके अनेक पन्ने काले हुए हैं।

अठारहवीं शताब्दीके मध्यमें विश्वके सकल औद्योगिक उत्पादनका एक चौथाई भारतमें निर्मित होता था, शताब्दीके अन्तमें भी विश्वके सकल औद्योगिक उत्पादनमें भारत पाँचवें भागका योगदान तो करता ही था। परन्तु सन् १८६० ईसवीके आते-आते भारतका भाग ९ प्रतिशतसे कुछ अल्प रह गया था। सन् १८८० ईसवीमें यह और घटकर ३ प्रतिशतसे नीचे पहुँच गया और सन् १९१३ तक विश्वके सकल औद्योगिक उत्पादनमें भारतका भाग डेढ़ प्रतिशत भी नहीं रह पाया। भारतके उद्योगोंका विनाश ब्रितानी प्रशासनके कालमें ऐसी तीव्र गति एवं ऐसी पूर्णतासे हुआ था।

उद्योगोंके विनाश एवं कृषिके ह्रासके चलते भारतके लोगोंके लिये आर्थिक अवसर लुप्त होने लगे और भारतकी सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था अत्यन्त निम्न स्तरपर पहुँच गयी। विश्वके सकल उत्पादनमें सन् १७०० ईसवीमें भारतका भाग २३ प्रतिशतके आसपास था। सन् १८२० ईसवीमें यह घटकर १६ प्रतिशतसे नीचे चला गया और १८९० ईसवीमें ११ प्रतिशततक पहुँच गया। ब्रितानी प्रशासनके अवसानके तुरन्त पश्चात् सन् १९५२ ईसवीमें विश्वके सकल उत्पादनमें भारतका भाग ४ प्रतिशतसे भी नीचे था। चीन और यूरोपीय लोगोंके अधीन आनेवाले विश्वके अन्य देशोंकी भी ऐसी ही परिणति हुई।

विश्वकी जनसंख्यामें भारतका भाग घटता चला गया

कृषि एवं उद्योग और वस्तुतः सारी अर्थव्यवस्थाके तीव्र ह्रासके साथ भारत विश्वकी जनसंख्यामें अपना प्रमुख स्थान खोने लगा। सन् १७०० ईसवीतक भी भारतकी जनसंख्या विश्वकी अन्य प्रमुख सभ्यताओंसे अधिक थी। उस समय भारतीय लोग विश्वकी कुल जनसंख्याका २६ प्रतिशत थे। चीनी तब विश्वमें दूसरे स्थान पर थे, विश्वकी जनसंख्यामें उनका भाग २३ प्रतिशत था। सन् १८२० ईसवीतक भारतके लोगोंका विश्वमें भाग २० प्रतिशत रह गया, सन् १९०० ईसवीमें यह और घटकर मात्र १४ प्रतिशत हो गया। ब्रितानी अन्तरालके अवसानपर सन् १९५० में विश्वकी जन-संख्यामें भारतका भाग किञ्चित् बढ़कर साढ़े सत्रह प्रतिशत हो गया था।

अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दियोंमें केवल भारतीय ही नहीं अपितु यूरोपीय लोगोंको छोड़कर विश्वके अन्य समस्त लोग विश्वकी जनसंख्यामें अपने भागको तीव्रतासे घटता हुआ देखते रहे। मानवताके दीर्घ इतिहासमें प्रायः अर्वाचीन कालतक यूरोपीय लोग विश्वकी जन-संख्याका किञ्चित् भाग ही रहे हैं। सोलहवीं सदीके प्रारम्भसे अमरीकी महाद्वीपपर यूरोपीयोंका अधिकार होनेके उपरान्त यूरोपीय लोगोंकी संख्या बढ़ने लगी। तथापि अठारहवीं शताब्दीके मध्यतक उनकी कुल संख्या भारतीयों एवं चीनियोंसे न्यून ही थी। सन् १८७५ ईसवीके आसपास यूरोपीय मूलके लोग विश्वका सबसे बड़ा सभ्यतागत समूह बन गये। और सन् १९२५ में जब पश्चिमका साम्राज्य अपनी पराकाष्ठापर था, यूरोपीय मूलके लोगोंकी संख्या भारतीयोंसे दोगुणीसे अधिक और चीनियोंसे डेढ़गुणातक पहुँच गई। इस प्रकार दो-ढाई सौ वर्षोंमें विश्वका रूप परिवर्तित हो गया। इस कालसे पूर्व विश्वमें भारतीयों और चीनियोंका वर्चस्व था, इसके पश्चात् विश्व मुख्यतः यूरोपीय लोगोंका विश्व बन गया।

सम्प्रति भारत, चीन और एशिया एवं अफ्रीकाके अन्य सब देशोंकी जनसंख्यामें जो वृद्धि हुई है वह विश्व की विभिन्न सभ्यताओंके मध्य संख्यात्मक अनुपातको पुनः सन्तुलित करनेकी सहज ऐतिहासिक प्रक्रियाका ही अंग है। भारतकी जनसंख्यामें स्वतन्त्रताप्राप्तिके पश्चात्से हुई वृद्धि निश्चय ही पर्याप्त है, परन्तु यह वृद्धि एशिया एवं अफ्रीकाके अन्य देशोंकी अपेक्षा कुछ अल्प ही रही है। एशियाके कतिपय देशों और प्रायः पूरे अफ्रीकी महाद्वीपकी जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ी है। तथापि यूरोपीय मूलके लोग अब भी विश्वकी जनसंख्याका एक तिहाई हैं और वे विश्वकी अन्य सब सभ्यताओंकी अपेक्षा अधिसंख्यक हैं।